[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 3373 **D**

Unique Paper Code : 2055201003

Name of the Paper : Hindi Bhasha Aur Sahitya (C) GE

Name of the Course : **B.A. (Prog) Hindi**

Semester : I

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (3×8==24)

(क) संसै खाया सकल जुग, संसा किनहुं न खद्ध।
जे बेधे गुर अष्षिरां, तिनि संसा चुणि चुणि खद्ध।।

चेतनि चौकी बैंसि करि, सतगुर दीन्हाँ धीर।
निरभै होइ निसंक भजि, केवल कहै कबीर।।

P.T.O.

अथवा

मैया मैं नाहिं माखन खायौ ।
ख्याल परै ये सखा सबै मिलि मेरैं मुख लपटायौ ।।
देखि तुही सींके पर भाजन, ऊंचे धरि लटकायौ ।
हौं जु कहत नान्हे कर अपनै मैं कैसैं करि पायौ ।।
मुख दधि पोंछि, बुद्धि एक किन्ही, दोना पीठि दुरायौ ।
डारि साँटि, मुसुकाइ जसोदा, स्यामहि कंठ लगायौ ।।
बाल-बिनोद-मोद मन मोह्यो, भक्ति-प्रताप दिखायौ ।
सूरदास जसुमति कौ यह सुख, सिव बिरंचि नहिं पायौ ।।

(ख) कनक कनक ते सौगुनो मादकता अधिकाय,
वा खाये बौरात है या पाएँ बौराय ।

कहत नटत रीझत खिझत मिलत खिलत लजियात ।
भरे भौन में करत हैं नैननि ही सों बात ।।

अथवा

रावरे रूप की रीति अनूप नयो नयो लागत ज्यौं ज्यौं निहारियै ।
त्यौं इन आँखिन बानि अनोखी अघानि कहूं नहिं आन तिहारियै ।
एक ही जीव हुतौ सु तौ वारयौ सुजान सकोच औ सोच सहारियै ।
रोकी रहै न दहै घनआनंद बावरी रीझ के हाथनि हारियै ।।

(ग) मैंने छुटपन में छिपकर पैसे बोये थे
सोचा था पैसों के प्यारे पेड़ उगेंगे,
रुपयों की कलदार मधुर फसल खनकेंगी,
और फूल फलकर मैं मोटा सेठ बनूंगा।
पर बन्जर धरती में एक न अंकुर फूटा,
बन्ध्या मिट्टी ने न एक भी पैसा उगला !
सपने जाने कहाँ मिटे, सब धूल हो गये !

अथवा

नदी बनने की प्रतीक्षा में, कहीं नीचे
शुष्क नाले में नाचता एक अंजुरी जल,
सभी, बन रहा है कहीं जो विश्वास
जो संकल्प हममें
बसी उसी के ही सहारे हैं।
लीक पर वो चलें जिनके
चरण दुर्बल और हारे हैं।

2. हिन्दी भाषा के भौगोलिक विस्तार को बतलाएं। (12)

अथवा

छायावाद युगीन कविता की प्रवृत्तियों को स्पष्ट कीजिए।

3. कबीर की भक्ति भावना को स्पष्ट करें। (12)

अथवा

कृष्णभक्ति काव्य में सूरदास के महत्व को बताएँ।

4. बिहारी की कविता में शृंगार-भावना को स्पष्ट करें। (12)

अथवा

रीतिकालीन कविता में घनानन्द के महत्व को रेखांकित कीजिए।

5. सुमित्रानंदन पंत की कविताओं के मर्म को स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की कविताओं की प्रासंगिकता बताएँ।

6. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : (3×6=18)

(क) वीरगाथा काल

(ख) सूरदास का वात्सल्य - वर्णन

(ग) रीतिमुक्त काव्य और घनानन्द

(घ) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का भावबोध